अखिलेश की कहानी 'चिट्ठी' ऐसे नौजवानों के बारे में है जिनका दावा है कि वह 'ज़िंदादिली की रोशनाई में डूबी कलम' हैं. विद्रोह, मस्ती, बेलौसी के साथ उच्छृंखलता उनके व्यक्तित्व का हिस्सा है और इसे वह पूरी ठसक के साथ अपने उपर ओढ़े रहते हैं. लेकिन इसी में समय रेत की तरह उनके हाथों से फिसला जा रहा है और ये लोग कहीं पहुँचने की जद्दोजहद में ही लगे रहते हैं लेकिन कहीं पहुँच नहीं पाते. ये कहानी कैम्पस के ऐसे नौजवान लड़कों की याद दिलाता है जो कैम्पस के फलक पर चमचमाते हुए उभरते हैं लेकिन फिर आकाश में गुम हो जाते हैं. परिवार, प्रेम, नौकरी कुछ भी इनके हाथ में नहीं लगता. वर्तमान को ये ठोकरों पर रखते हैं, भविष्य की चिंता करते हैं लेकिन समय इन्हें अतीत में धकेल देता है.

आख़िर इन नौजवानों कि नियति के लिए कौन ज़िम्मेदार है- व्यवस्था, समाज या ये ख़ुद. कहानीकार इस सवाल का जवाब नहीं देता लेकिन सच की तह तक जाने का रास्ता ज़रूर खोल देता है. व्यवस्था और समाज के जड़ और निर्मम रवैये की पड़ताल भी इन कहानियों में छुपी है. इस कहानी में इलाहाबाद का छात्र जीवन धड़कता है.

इन दोनों कहानियों के लिखे जाने के बाद से समय बदला है लेकिन फिर भी इन कहानियों में वर्णित यथार्थ ने हमें प्रेरित किया कि हम इनके समय से अपने समय के नौजवानों को जोड़ें और महसूस करें कि इस बीते समय में हमारे आज की आहट है या नहीं?

नाटक के बारे में

कैम्पस यानी शैक्षिक परिसर ऐसी जगहें होती हैं जहाँ नौजवानों का व्यक्तित्व आकार लेता है. उनकी आकांक्षाएँ , उनके सपने, उनके प्रेम और उनकी निराशाओं को भी यहीं स्वरूप मिलता है. इन कैम्पसों के छात्रों की चेतना कैसे तैयारी होती है, जीवन से उनकी क्या उम्मीदें है और उनके संघर्ष को कैम्पस कैसे और भी गाढ़ा करता है? क्या सभी लोग सफल होते हैं यहाँ से निकलकर? असफल लोगों के साथ समाज का बर्ताव क्या होता है? असफलता के स्रोत व्यक्ति में हैं या व्यवस्था में? इन सभी सवालों को प्रस्तुति के ज़रिए अभिव्यक्त करने की क़वायद है यह प्रस्तति कैम्पस कथा.

कैम्पस कथा को हम हिंदी की दो चर्चित कथाकारों की दो चर्चित कहानियों के ज़रिए प्रस्तुत कर रहे हैं. पहली कहानी है स्वयं प्रकाश की 'लड़कियाँ क्या बातें कर रही थीं' और दूसरी कहानी है अखिलेश की 'चिट्ठी'.

स्वयं प्रकाश की कहानी 'लड़कियाँ क्या बातें कर रहीं थीं' अपेक्षाकृत छोटी और संवाद परक कहानी है जिसमें कहानी का पुरुष वाचक कॉलेज जानी वाली लड़कियों की बातचीत के अनुमान के ज़रिए उनके जीवन के यथार्थ का अनुमान लगाने की कोशिश करता है और कहना न होगा कि यह अनुमान वास्तविकता के काफ़ी क़रीब है और अंत में वाचक का अवसाद से भर जाना उस वास्तविकता को महसूस करने का प्रभाव है जो किसी सजग और संवेदनशील व्यक्ति पर पड़ता है. कहानीकार ने इस कहानी में अपने वाचक पुरुष को कहीं छिपाने की कोशिश नहीं की है. कहानी परास्नातक की शिक्षा ले रही लड़कियों के बारे में है जो जीवन के निर्णायक मुहाने पर खड़ी होती हैं. इतने साल बीत जाने के बाद भी कस्बाई लड़कियों के जीवन के यथार्थ में अधिक परिवतन नहीं हुआ है बल्कि कैम्पस का शैक्षणिक माहौल भी नहीं बदला.

यूनिवर्सिटी थियेटर

और

स्वराज विद्यापीठ

प्रस्तुत करते हैं

कैम्पस कथा

निर्देशकीय

नाटक करना हमारे लिए केवल प्रस्तुति करना भर नहीं हैं. इसीलिए हम सुगठित आलेख की जगह कहानियाँ अधिक चुनते हैं या अपने लिए आलेख लिखते हैं. कैम्पस की कथा कहने के क्रम में हमने इन कहानियों को यथार्थ का दो पहलू दिखाने के लिए आमने-सामने रखने की कोशिश की है.
एक तरफ़ लड़कियाँ है जिनके पास अवसर सीमित हैं और आज़ादी और भी सीमित. अपने लिए फ़ैसला लेने की एजेंसी उनके पास नहीं है. दूसरी तरफ़ उनकी ही उम्र के लड़के हैं जो आज़ाद हैं, उस आज़ादी का बेजा फ़ायदा भी उठाते हैं. एक तरफ़ कुछ करने का स्वप्न है लेकिन अवसर नहीं, दूसरी तरफ़ अवसर को गँवा देने की लापरवाही है.
'चिठ्ठी' कहानी की प्रस्तुति में कोशिश की गई है कि लड़कों की इस दुनिया को आलोचनात्मक निगाह से देखा जाए इसलिए आलेख में ऐसे स्पेस को एक्सप्लोर किया गया है. लड़कों की दुनिया पुरुषों की दुनिया है इसलिए उन्हें आईना एक लड़की ही दिखाती है. दरअसल अराजकता में अक्सर असफलता का मार्ग तैयार होता है ज़ाहिर है कि सफलता से आशय दुनियावी नहीं है. यह कथ्य संप्रेषित हो सका है कि नहीं यह दर्शकों को तय करना है.

यूनिवर्सिटी थियेटर में विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाशीलता से रास्ता निकालने की छूट होती है जिसे एक निर्देशकीय क़तर ब्योंत के साथ दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है. कक्षाओं और परीक्षाओं के बीच भागते दौड़ते अभिनेताओं के साथ प्रस्तुति कर सकना ही चुनौतीपूर्ण है लेकिन इस कारण ही हम अपने मूल्यांकन में आपसे कोई छूट नहीं चाहते बस हम सहृदयता के आकांक्षी हैं.

प्रतिभागी

मंच पर- शिवम, श्रीह, शुभी, सौम्या, प्राची, दीपशिखा, सौम्या, माधवी, श्रद्धा, सैफ़, गौतम, प्रीत, आदित्य, शानु, हर्षित, जयप्रकाश, गौरव, चेतन, अर्पिता, कीर्ति, प्रज्ञा, दुर्गेश, शानु

मंच परे- हर्ष, अजीत, आदित्य, पूजा, शुभम, ख़ुशी, ताशु, और टीम यूटी.

अतिरिक्त आलेख- कीर्ति

पोस्टर - हर्षित और पीयूष

प्रस्तुति निंयत्रण-यश, गौतम, माधवी, दीपशिखा

कार्यशाला और प्रस्तुति प्रबंधन- पीयूष

ध्वनि परिकल्पना- अमर

ध्वनिं संचालन- सक्षम

अभिनय प्रशिक्षण- जहाँगीर

परिकल्पना और निर्देशक- अमितेश कुमार

विशेष सहयोग- प्रवीण शेखर, शीतांशु भट्ट, शिवम, जुगेश,
संरक्षण- डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, डॉ विनम्र सेन सिंह, डॉ सुजीत कुमार सिंह, डॉ बृजेश पांडे, डॉ. स्वप्निल श्रीवास्तव और सुमन शर्मा

आभार- अखिलेश, पल्लव, बैकस्टेज समूह

यूनिवर्सिटी थिएटर के बारे में-

साल 2018 का अंत हो रहा था, सर्दियों की आमद होने वाली थी ऐसे में कुछ छात्र एकत्रित हुए इस ध्येय से कि विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम से इधर उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के विकास के लिए भी कोई मंच होना चाहिए, जहां वह सिलेबस की दुनिया के बाहर एक दूसरे से मिलकर अपने आत्म को तलाशें। इस खोज में उनके सामने विकल्प आया एक रंग समूह बनाने का। यह समूह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों की एक स्वायत्त सांस्कृतिक पहल है। यह ध्यान में रखते हुए कि विश्वविद्यालय का अतीत इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियों को संजोए हुए हैं। प्रस्तुति के सिलसिले की शुरुआत कहानी मंचन से हुई जिसके अंतर्गत दो कहानियों 'सिरी उपमा जोग' और 'भोलाराम का जीव' का मंचन हुआ। समूह ने श्रुति नाटक शैली की शुरुआत की जिसके तहत प्रेमचंद जी के जयंती पर 'कफन' कहानी का नाट्य पाठ हुआ। गाँधी जी के जीवन पर आधारित प्रस्तुति 'जब वी मेट गाँधी' की प्रस्तुति के बाद समूह ने श्रीकांत वर्मा के कविता संग्रह 'मगध' की प्रस्तुति की। 'यूटी की किताबशाला' किताबों पर चर्चा की शृंखला है। 'फिल्मशाला' फ़िल्मों का प्रदर्शन और उन पर चर्चा का मंच है. कोरोना काल में रेणु की कहानी पर वीडियो प्रस्तुति और बाद में मंचीय प्रस्तुति हुई। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर समूह ने क्रांतिकारी आंदोलन पर आधारित नाटक 'कौन आज़ाद हुआ' की प्रस्तुति की। हबीब तनवीर की जन्मशती पर उनके द्वारा लिखित नाटक 'सड़क' की प्रस्तुति हुई. इस वर्ष समूह ने प्रेमचंद की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' की अंग्रेज़ी भाषा में प्रस्तुति की साथ ही इस कहानी को 'हिंसा परम धर्म' के साथ हिंदी में भी प्रस्तुत किया गया. यूनिवर्सिटी थियेटर अपने पाँचवें वर्ष में अपनी नई प्रस्तुति के साथ प्रस्तुत है.